पद १०१

(राग: काफी - ताल: धमार)

वेधिलें मन बाई आतां गे। जगदंबेसि पाहतां।।ध्रु.।। मस्तिकं मुकुट रत्नखचिताचा। कुंकुम चर्चिले माथां गे।।१।। चंद्रवदन जीचें सरळ नासिक। शस्त्र झळके आठीं हातां गे।।२।। दाट चुडे नेसे पिवळा पितांबर कंचुकी तटतटी छाता गे।।३।। मूर्ती पाहुनि मन उन्मन झाले। माणिक वंदि जगन्माता गे।।४।।